अध्याय – प्रथम
शोध परिचय

अध्याय – प्रथम

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना

शिक्षा ही भविष्य है। यही अच्छे भविष्य की ओर ले जाती है तथा भविष्य के लिए ही कार्य करती है। निरन्तर विकासशील वर्तमान भौतिकवादी युग में प्रायः हर व्यक्ति महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति में अनवरत संलग्न है। छात्र जीवन से ही व्यक्ति के मन में अपने भविष्य निर्माण हेतु कुछ शैक्षिक आकांक्षाएँ आकार लेती है।

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना है अर्थात् शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, भावात्मक विकास के साथ व्यावसायिक विकास भी है। व्यवसाय के लिए भिन्न– भिन्न योग्यताओं एवं क्षमताओं वाले व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। जो कि विभिन्न व्यवसाय को अपना सकें इसलिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों को अपने भविष्य में किसी व्यवसाय के प्रति दृढ़ इच्छा है। या वह क्या बनना चाहता है? यह जाने अर्थात् उसकी व्यावसायिक इच्छा को जानना आवश्यक है।

आकांक्षा से अभिप्राय भविष्य में उपलब्धि का आशावादी चिंतन है। जब आकांक्षा आदर्शवादी एवं मूल्य आधारित होती है, तो वह यह नहीं देखती कि संसाधन उपलब्ध है, या नही आकांक्षा कि तुलना में अपेक्षा अधिक यथार्थवादी हाती है, जब अपेक्षा और आकांक्षा के बीच का अन्तर कम होता जाता है, तब विकास होता चला जाता है। शैक्षिक अपेक्षाए छात्र के दृष्टिकोण और प्रत्यक्षीकरण कि क्षमता तथा भविष्य हेतु उसके आशावादी चिन्तन को स्पष्ट करती है, अपेक्षाओं कि तुलना आकांक्षाए बहुत उच्च होती है, (मार्गन 1966, 2005) इनके आधार पर भविष्य कि अतिरिक्त शिक्षा को लेकर विद्यार्थियों को अपनी इच्छाओं को प्राप्त करने के लिए निर्देश दिये जाते है। (कैम्पबेल 1983)

शैक्षिक आकांक्षा एवं शैक्षिक अपेक्षाओं मे सांस्कृतिक तत्व छूपे होते है, जो यह निर्धारित करने मे सहायक होते है, कि विद्यार्थियों को विषय चयन करवाते समय मार्गदर्शक को उसकी सामाजिक पृष्ठभूमि के बारे में जानना अत्यन्त आवश्यक है।

अपेक्षा तथा आकांक्षा दोनों ही अमूर्त शैक्षिक दिशा निर्धारण हीं नहीं बल्कि मूर्त अर्थात् निश्चित शैक्षिक उपलब्धि व्यवहार की माप होती है। शैक्षिक आकांक्षा, अपेक्षा तथा योजना व्यक्तित्व के सम्मिलित रूप का निर्धारण करता है। सामाजिक आर्थिक स्थति शैक्षिक उपलब्धि से बहुत अधिक तथा सशक्त रूप से जुड़ी हुई है।

शैक्षिक आकांक्षा पर सामाजिक पृष्ठभूमि के प्रभाव के अध्ययन से यह पता चलता है, कि जो बच्चे उच्च सामाजिक– आर्थिक पृष्ठभूमि में रहते है, वे प्रायः स्कूलों में बहुत अच्छा प्रदर्शन करते है, एवं उच्च शिक्षा के प्रति लालायित रहते है। एवं उसी विषय को चुनते है जबकि ऐसा प्रायः निम्न सामाजिक– आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चों में नहीं पाया जाता **डुरू बेलेट (1973)**इसी सिद्धान्त के आधार पर शैक्षिक आकांक्षा किसी विशेष स्थिति मूल्य निर्धारण का अमूर्त आदर्श है, जिससे विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा का प्रभाव उसके आकांक्षा स्तर पर पड़ता है। **सेवेल, हॉलर और पोर्टस (1969)**

शैक्षिक प्रणाली में मूल समस्या को समझने के लिए जो रास्ता है, वही सामाजिक – आर्थिक पृष्ठभूमि के कारण भविष्य में असमानताएँ उत्पन्न कर सकती है।

शैक्षिक आकांक्षा में विषमता होना किशोरों की विभिन्न सामाजिक – आर्थिक पृष्ठभूमि के कारण है। शैक्षिक आकांक्षा पर अत्यधिक प्रभाव उसके सामाजिक– आर्थिक पृष्ठभूमि का (अभिभावकों की शिक्षा, व्यवसाय तथा पारिवारिक आय) पडता है।

गर्ग एवं अन्यः सामाजिक – आर्थिक पृष्ठभूमि का प्रभाव अप्रत्यक्ष रूप से उसके व्यक्तिगत कारक (शैक्षिक उपलब्धि अभिभावकों की शिक्षा आकांक्षा विषय का ज्ञान अतिरिक्त पाठ्यचर्या, गृहकार्य का महत्व) आदि के द्वारा अभिभावकों को शामिल होने की पुष्टि की गई है। शैक्षिक आकांक्षा के विकास के लिए स्कूली वातावरण का सहयोग एवं समर्थन होना आवश्यक है।

शैक्षिक आकांक्षा व्यक्ति की दृढ़ इच्छा को अपने जीवन और विद्यालय में मार्गदर्शन से कैसे तैयार किया जायेगा, शैक्षिक आकांक्षा यह पहचान कराती है कि मूल योजना क्या है ? तथा कौशल से परिचित

कराती है, शैक्षिक प्रतियोगिता जो जीवन पर्यन्त सीखने की प्रक्रिया को प्रशस्त करती है। शैक्षिक किसी आकांक्षा किसी उद्देश्य को गहराई से समझने क्रमबद्ध तथा उसके पर्याप्त ज्ञान की पुनः संरचना है। शैक्षिक आकांक्षा व्यक्ति के विचारों का चितंन है। जो निश्चित समाधान है।

जो व्यक्ति जितना जिस रूप में पाने कि इच्छा करता है वह उसी रूप में उसके लिए प्रयत्न करना भी चाहता है। आवश्यक बात यह है कि उचित सफलता के लिए आकांक्षा के स्तर का न तो अपनी सामर्थ्य और शक्तियों से बहुत अधिक होना अच्छा सिद्ध हो सकता है और न ही बहुत कम।

शिक्षा का उद्देश्य केवल सामाजिक परिवर्तन नहीं बल्कि समाज के लिए आदर्श बनाना है, और फिर उन्हें नया रूप देना है। शिक्षा लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा के लक्ष्य समाज के मौजूदा आकांक्षाओं व जरूरतों के साथ शाश्वत मूल्यों तथा समाज के तात्कालीन सरोवरों सहित वृहद मानवीय आदर्शो के भी प्रतिबिम्बित करते हैं।

"21 वीं सदी में उच्च शिक्षा की चुनोतियाँ " भविष्योंमुखी दृष्टि और उच्च शिक्षा :– प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भारी परिवर्तन हुए हैं, परन्तु आज भी इसमें सुधार की गुंजाइश बनी हुई है। 21 वीं सदी में उच्च शिक्षा के समक्ष अनेक चुनौतियाँ है जिनसे निपटना अत्यंत जरूरी है।"

<u>एडम्स के अनुसार</u> – "शिक्षा एक ऐसी सुनियोजित प्रकिया है, जिसमें एक व्यक्तित्व का विकास करने के लिए उस पर दूसरे व्यक्तित्व का प्रभाव मन, वाणी एवं कर्म द्वारा पड़ता है। "

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुच्छेदों में यह कहा गया है कि शिक्षा इस समय भारत में चौराहे पर खड़ी है न क्षैतिज विस्तार और न ही सुधार की वर्तमान गति और प्रकृति स्थिति की अपेक्षाओं के अनुरूप है। 24 वर्ष व्यतीत होने के बाद भी उपरोक्त वाक्य आज की परिस्थिति के अनुरूप ही है। हम जिस प्रकार के समाज का निर्माण करना चाहते है उसी के अनुरूप हमारी शिक्षा प्रणाली होनी चाहिए। भावी शिक्षा मानव समाज के शिक्षा निर्देश के लिए योग्यतम नायको को जन्म दे सके यहीं

हमारी शिक्षा का लक्ष्य एवं भविष्योंन्मुखी दृष्टि होनी चाहिए यद्यपि भारतीय शिक्षा के लक्ष्य महान् है परन्तु उनके साधनों की लघुता है। आज जनसामान्य की आकांक्षा है कि उच्च शिक्षा की उपलब्धता सहज एवं गुणवत्ता बेहतर हो।

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952– 53) में शिक्षा केवल एक मार्ग पर चलने वाला नहीं होना चाहिए, बल्कि बहुआयमी होना चाहिए ताकि आवश्यक शिक्षा के अंतर्गत भिन्न प्रकार की अभिवृत्तियों, रूचियों व योग्यताओं वाले बच्चों की शिक्षा की जरूरतों को पुरा किया जा सके। इस प्रकार प्रशिक्षित किए जाये की जनतंत्रात्मक समाज के जिम्मेदार नागरिक बन सके।

माध्यमिक़ शिक्षा जैसा कि स्वतः स्पष्ट है, शिक्षा संरचना की मध्यस्थ कड़ी है यह एक ऐसी कड़ी है जिससे एक ओर प्राथमिक शिक्षा व दूसरी ओर विश्वविद्यालय शिक्षा जुड़ी हैं। माध्यमिक शिक्षा वर्तमान प्रणाली की सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा है, वर्तमान समय में माध्यमिक शिक्षा का महत्व और अधिक बढ़ गया है, क्योंकि जब से शिक्षा के व्यवसायिकरण का प्रश्न लोगों के सामने आया, और बेरोजगारी को दूर भगाने के लिए लोग सचेष्ट हुए तभी से लोगों ने माध्यमिक शिक्षा के महत्व को समझा और महत्व दिया इसलिए आज माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम के अंतर्गत अनेक विषय को रखा गया है, और पाठ्यक्रम में वैभिन्नीकरण के सिद्धान्त को प्रमुखता दी जा रही है। जिससे अपनी रूचि के अनुसार अपने विषयों का अध्ययन कर छात्र–छात्राएँ अपने भविष्य के रोजगार हेतु सचेष्ट हो जाए उसी दिशा की ओर प्रयास करे। यदि माध्यमिक शिक्षा सभी मार्ग दिखाने में सफल हो जाती है, तो निःसंदेह शिक्षा के बहुत बड़े उद्देश्य की पूर्ति समझी जा सकती है। इस दृष्टि से माध्यमिक शिक्षा का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

बारहवीं के स्तर पर जो विषय बच्चों के सामने रखे जाते हैं, उन्हें इस अनुशासन में होने वाले विकास के प्रति सजग रहना चाहिए क्योंकि विकास की इस प्रक्रिया में ज्ञान के नऐ क्षेत्र तराशे जाते हैं। विभिन्न अनुशासनों के अन्दर ही अध्ययन के कई क्षेत्र ऐसे है, जिनका महत्व बढ़ रहा है। व्यावसायिक शिक्षा मूलतः उन लोगों को ध्यान मे रखकर शुरू की गई थी। जो काम में उन लोगों से पहले लग जाते है, जो

अकादमिक परीक्षा पास करके कार्य क्षेत्र में आते है, या आगे अनुसंधान करते हैं। हम उत्पादक कार्य में ज्ञान अर्जन का शिक्षाशास्त्रीय माध्यम बनाने का सुझाव देते हैं ताकि शिक्षा के सभी स्तरों पर विद्यार्थियों में मुल्य तथा बहुविध कौशल विकसित हो सके।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) के अनुसार शिक्षा के सामाजिक संदर्भ में शिक्षा व्यवस्था उस समाज से अलग थलग होकर कार्य नहीं करती जिसका वह एक भाग है। विविधता और असमान विकास से, जो भारतीय समाज की विशेषताएं हैं, शिक्षा की प्राप्ति और स्कूलो में बच्चों की सहभागिता प्रभावित होती है।

शिक्षा को लेकर माता पिता की आकांक्षाएँ, स्थानीय गरीबी और असमान सामाजिक संबंधों व पर्याप्त समस्त स्कूली शिक्षा की कमी के कारण ध्वस्त हो जाती है। शिक्षा को लेकर निर्धन वर्ग की अपेक्षाओं व आकांक्षाओं को पाठ्यचर्या की रूपरेखा के सरोकारों से अलग नहीं रखा जा सकता।

माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना एवं व्यवसायिक कुशलता का विकास करना है। माध्यमिक शिक्षा चूँकि स्वयं अपने आप में पूर्ण इकाई के रूप में मानी जाती है। इसलिए इसका उद्देश्य है कि न केवल विद्यार्थी को विश्वविद्यालय के लिए ही तैयार करना वरन् उसे व्यवसाय कुशल भी बनाना है। जिससे कि उसकी क्षमताओं को सही दिशा प्राप्त हो सके। और वह अपने रूचि के अनुसार अपने व्यवसाय को अपनाते हुए उचित संसाधनों का प्रयोग करते हुए राष्ट्र के विकास मे योगदान दे सके।

दो सालों की वह अवधि वह समय है, जब विद्यार्थी अपनी रूचियों, क्षमताओं और भविष्य की जरूरतों कि हिसाब से विकल्प चुनते है, अपनी रूचि और अपने भविष्य में पेशे के आधार पर वैकल्पिक विषयों के अध्ययन की संभावना जिससे विद्यार्थी ज्ञान के भिन्न क्षेत्रों को समझ पाये इस चरण की शिक्षा मे अंतर्निहित हो।

उच्चतर माध्यमिक स्तर दस वर्षो की शिक्षा छात्रों के लिए सभी विषयों के समान अध्ययन का अवसर प्रदान करती है, उच्चतर माध्यमिक स्तर इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योकि इसी स्तर पर छात्रों की उनकी

आवश्यकता और अभिरूचि के अनुरूप विषयों को चुनने का अवसर मिलता है, कुछ विद्यार्थियों के लिए यह औपचारिक शिक्षा को छोड़ रोजगार की दुनिया में कदम रखने का समय है तो कुछ के लिए उच्च शिक्षा की नींव तैयार करने का। अतः इस स्तर पर उन्हें आधारभूत ज्ञान और आवश्यक कौशल प्रदान किया जाना चाहिए ताकि वे इच्छानुसार क्षेत्र चुनकर सार्थक योगदान कर सके साथ ही, इस स्तर पर विषय वस्तु का चुनाव उच्च शिक्षा के साथ सामंजस्य स्थापित करने की दृष्टि से भी होना चाहिए। विविधता तथा लचीलेपन, के लिए समानता ओर गुणवत्ता जैसे उद्देश्यों से समझौता नहीं किया जा सकता। छात्रों की पृष्ठभूमि एवं क्षेत्रीयता का भी ध्यान रखा जाना चाहिए।

शिक्षा का अर्थ केवल व्यक्ति को साक्षर बनाना हीं नहीं अपितु उसमें आधारभूत नागरिकों के गुणों का निर्माण करना भी है। शिक्षा का जीवन मे अनन्त महत्व है इससे सुखद तथा संतुलित जीवन व्यतीत करने की दिशा मिलती है। विवेक शक्ति का विकास होता है। उत्पादन क्षमता मे वृद्धि होती है। 'जीने की कला' में प्रशिक्षण मिलता है। आय बढ़ती है। जीवन स्तर ऊँचा उठता है।

भारतीय संविधान में शिक्षा के संवैधानिक रूप की विवेचना करते हुए कोठारी कमीशन ने कहा था– 'हमने समस्या का गहन अध्ययन किया है। हम समस्या को विभाजित करके एक भाग समवर्ती एवं दुसरा राज्य सूची में नहीं रखना चाहते शिक्षा को हमेशा एक रूप मे ही समझना चाहिए। '

डॉक्टर वी. पी. लुल्ला ने लिखा है – 'सबसे महत्वपूर्ण संकेत संविधान की प्रस्तावना से मिलता है जिससे नागरिकों को हर तरह का न्याय विचार कार्य स्वंतत्रता समानता तथा भ्रातृत्व प्राप्त होगा।

शिक्षा से सम्बन्धित धारायें:–

1). धारा (28)1 – राज्य द्वारा पूर्णतः पोषित किसी शिक्षा संस्था में धार्मिक शिक्षा नही दी जायेगी।

2). धारा (29)1 – भारत राज्य क्षेत्र या उसके किसी भाग के निवासियों के विभाग को उसके विशेष संस्कृति बनाये रखने का अधिकार होगा।

धारा (29) 2 – राज्य द्वारा पोषित अथवा राज्य निधि से मदद प्राप्त करने वाली किसी शिक्षा संस्था में किसी नागरिक को धर्म, प्रजाति, जाति, भाषा, अथवा उनमें से किसी एक के आधार पर प्रवेश देने से नहीं रोका जायेगा।

3). **धारा (30)** – धर्म अथवा भाषा पर आधारित सभी अल्पसंख्यक वर्गो को अपनी रूचि की शिक्षा संस्थाओं की स्थापना एवं प्रशासन का अधिकार होगा।

4). **धारा (45)** – राज्य इस संविधान के लागू होने के समय से 10 वर्ष के अंतर्गत सभी बच्चों हेतु जब तक वे 14 वर्ष की आयु पूर्ण नहीं कर लेगें निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का प्रयत्न करेगा।

5). **धारा 46**– राज्य जनता के निर्बल विभागों विशेषतया अनुसूचित जातियों के शिक्षा एवं अर्थ संबिधत विशेष सावधानी से उन्नति करेगा। तथा सामाजिक अन्याय सभी तरह के शोषण से उनका संरक्षण करेगा।

1.2 अध्ययन कि आवश्यकता :– शिक्षा ही भविष्य है। यही अच्छे भविष्य की ओर ले जाती है तथा भविष्य के लिए ही कार्य करती है। निरन्तर विकासशील वर्तमान भौतिकवादी युग में प्रायः हर व्यक्ति महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति में अनवरत संलग्न है। छात्र जीवन से ही व्यक्ति के मन में अपने भविष्य निर्माण हेतु कुछ शैक्षिक आकांक्षाएँ आकार लेती है।

शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान और कौशल ही नहीं इसके अतिरिक्त उसे परिवार के प्रति समाज के प्रति दुनिया के प्रति राष्ट्र के प्रति उसे उसके ज्ञान को विकसित करती है। इसीलिए शिक्षा की आकांक्षा भी विकसित होती है। तथा आकांक्षा के आधार पर ही व्यक्ति भविष्य के लिए विषय चयन करता है। लेकिन सामाजिक पृष्ठभूमि के कारण वह अपनी आकांक्षा तथा विषय चयन उचित ढंग से नही कर पाता प्रायः देखा गया है कि व्यक्ति को अपने जीवन निर्माण के लिए उचित क्षेत्र में अपनी आवश्यकताओं को वह इच्छाओं तथा आकांक्षाओं को पूर्ण करने कि ललक होती है। तथा वे उसी प्रकार के विषय को चुनते है **चौधरी (1990)** के

अध्ययन में पाया गया कि 40 प्रतिशत विद्यार्थी या तो डॉक्टर बनना चाहते थे या तो इंजीनियर ।तथा 80 प्रतिशत विद्यार्थी विज्ञान के क्षेत्र में अधिक रुचि रखते थे।

अतः व्यक्ति अपनी योग्यता तथा क्षमताओं के आधार पर विषय चयन करते है। लेकिन कभी– कभी सामाजिक पृष्ठभूमि के कारण इसका लाभ नही उठा पाते है। अतः यह कहा जा सकता है कि सामाजिक पृष्ठभूमि साधन भी हो सकती है, और शैक्षिक आकांक्षा के मार्ग में बाधक भी हो सकती है।

रेड्डी (1972) परिवार व सामाजिक आर्थिक स्तर व्यवसायिक तथा शैक्षिक आकांक्षा मे सहसम्बन्ध पाया गया अर्थात सामाजिक पृष्ठभूमि की विषय चयन की महत्वपूर्ण भूमिका है। पिता के व्यवसाय का भी विषय चयन पर प्रभाव देखा गया। अतः स्पष्ट है कि व्यावसायिक आकांक्षा व्यक्ति के जीवन को संवार सकती है। अतः व्यक्ति के जीवन निर्माण मे व्यवसायिक आकांक्षाओं के निर्माण और विषय चयन में शिक्षा व्यवस्था का प्रमुख उत्तरदायित्व होता है।

'व्यक्ति के जीवन निर्माण में व्यावसायिक आकांक्षा के निर्माण और चयन में शिक्षा व्यवस्था का प्रमुख उत्तरदायित्व होता है। व्यावसायिक आकांक्षा तथा चयन में वातावरण भी एक प्रमुख भूमिका निभाता है तथा वंशानुक्रम के आधार पर भी बालक विषय चयन करता है। व्यक्ति की शैक्षिक आकांक्षा स्वतन्त्र नहीं होती, इस पर व्यक्ति की सामाजिक आर्थिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति कई बार अपने पारिवारिक इतिहास के आधार पर विषय का चयन करता है।'

शैक्षिक आकांक्षा के विकास में परिवार, वातावरण, विद्यालय, मित्र समुह, अभिभावकों का व्यवसाय, उनकी आय इत्यादि तत्व सहायक होते हैं। वह व्यक्ति कि इच्छाओं तथा विषय चयन पर प्रभाव डालते है। व्यक्ति कि आकांक्षा परिवार की सामाजिक– आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है।

आकांक्षा ही व्यक्ति के जीवन निर्माण में सहायक है। लेकिन शैक्षिक आकांक्षा विभिन्न कारकों से प्रभावित होती है। जिसे मैनें अपने छात्र जीवन में अनुभूत किया था। इसीलिए इस विषय पर शोध कार्य करने

हेतु निश्चय किया कि किस प्रकार से व्यक्ति की शैक्षिक आकांक्षा, सामाजिक पृष्ठभूमि के कारण प्रभावित होती है। अतः यह शोध कार्य इसी दिशा में एक प्रयास हैं।

1.3 समस्या कथन :– *कक्षा 11 वीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करना।*

1.4 शोध के उद्देश्य :–

1. कक्षा ग्यारहवीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करना।
2. लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करना।
3. विद्यालय प्रबंधन के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करना।
4. विभिन्न संकाय के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करना।
5. शैक्षणिक श्रेणी के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करना।
6. अभिभावकों के व्यवसाय के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करना।
7. अभिभावकों की मासिक आय के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करना।

1.5 शोध परिकल्पनाएँ :–

1. लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. विद्यालय प्रबंधन के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. विभिन्न संकाय के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4. शैक्षणिक श्रेणी के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5. अभिभावकों के व्यवसाय के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

6. अभिभावकों की मासिक आय के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

1.6 शीर्षक में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या :–

1.6.1 आकांक्षा :–

'आकांक्षा अर्थात् 'दृढ़ इच्छा या लक्ष्य।'

आकांक्षा व्यक्ति की योग्यताओं तथा उसके वातावरण से संबंधित है। वस्तु की व्यक्ति इच्छा करता है उसका संबंध जीवन के लक्ष्यों से होता है। उसे हम आकांक्षा कहते है।

आकांक्षा से तात्पर्य उस सामान्य लक्षणों से होता है जिन्हें व्यक्ति अपने जीवन मे निश्चित करता है। व्यक्ति की आकांक्षा उसकी पूर्व सफलता या असफलता की अनुभूति से प्रभावित होती है।

फेसरिंगर (1948) व्यक्ति की आकंक्षा उस सामाजिक समुह पर निर्भर करता है जिससे वह अपना सम्बन्धन स्थापित करता है।

फ्रेंक के अनुसार आकांक्षा ''व्यक्ति द्वारा किसी कार्य मे भविष्य के स्तर की उसी कार्य के पिछले ज्ञान के स्तर प्राप्ति की स्पष्ट घोषणा है।''

1.6.2 आकांक्षा का स्तर :

आकांक्षा का स्तर भी प्रेरक के रुप में सीखने की प्रक्रिया को गतिशील बनाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन मे निर्धारित करके उन तक पहुँचने का प्रयास करता है। इसके लिए व्यक्ति कठोर परिश्रम प्रारम्भ कर देता है। किन्तु लक्ष्य एक होने पर आकांक्षा का स्तर भिन्न–भिन्न व्यक्यिों मे भिन्न– भिन्न होता है।

- **इवान (1978) :–** "आकांक्षा स्तर से तात्पर्य उन सामान्य लक्षणों से होता है जिन्हें व्यक्ति अपने जीवन में निश्चित करता है। मनोवैज्ञानिक अध्ययन से पता चलता है कि आकांक्षा स्तर एक ऐसा आश्रित चर है जिस पर कई तरह के स्वतंत्र चरों का प्रभाव पड़ता है। ऐसे स्वतन्त्र चरों में व्यक्ति की गत अनुभूति काफी प्रधान होती है। लगातार सफलता की अनुभूति होने से छात्र अपना आकांक्षा का स्तर ऊँचा कर लेते है।"

आकांक्षा का स्तर व्यक्ति की योग्यताओं तथा उसके वातावरण से सम्बन्धित होता है। जिस वस्तु की व्यक्ति इच्छा करता है उसका संबंध जीवन के लक्ष्यों से होता है ।

हरलॉक 1978:– "एक व्यक्ति द्वारा पहले प्राप्त किए गए लक्ष्य और आशा किए जाने वाले लक्ष्य के बीच मित्रता ही उसकी आकांक्षा का स्तर है।"

1.6.3 शैक्षिक आकांक्षा :– शैक्षिक आकंक्षा व्यक्ति के विचारों का चिंतन है।

शैक्षिक आकांक्षा व्यक्ति की अपने जीवन शिक्षा के प्रति दृढ़ इच्छा है।

व्यावसायीकरण तथा शिक्षा की नई पद्धति :–

10+2+3 – भारत की नई शिक्षा पद्धति 10+2+3 स्वीकार कर ली गई है। कक्षा दस से अभिप्राय है कि दस वर्ष तक सभी छात्र–छात्राओं को सामान्य रूप से व्यापक शिक्षा दी जाऐ। 10 वर्ष के पाठ्यक्रम में सभी विषय होगे। विद्यार्थियों को उन सभी विषयों का ज्ञान दिया जाऐगा जो उनके जीवन के लिए लाभप्रद होगा। 10 वर्ष की शिक्षा के पश्चात् 10+2 की शिक्षा होगी। इस अवस्था में विद्यार्थियों के सामने दो मार्ग होंगे एक मार्ग व्यावसायिक एवं ओद्यौगिक शिक्षा और दूसरा ऐकेडमिक का होगा। जो विद्यार्थियों की रूचि, अभिरूचि, बौद्धिक स्तर पर कार्य क्षमता के अनुसार होगा। इस स्तर पर बहुत से विद्यार्थी जीवन यापन के लिए व्यवसाय चुन लेंगे उनके लिए इस प्रकार ही कार्य योजनाओं का आयोजन होगा जो व्यक्तिगत विभिन्नताओं को पूरा करेगा।

उच्चतर माध्यमिक स्तर :–

दस वर्ष की समान्य शिक्षा के क्रम में सभी विद्यार्थियों के लिए समान अध्ययन की योजना है। उच्च माध्यमिक स्तर इसलिए महत्वपूर्ण माना जाता है। क्योकि यह विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकता रूचि और अभिवृति के अनुसार विषय क्षेत्र में चुनने का अवसर देता है। कुछ विद्यार्थियों के लिए यह स्तर उनकी औपचारिक शिक्षा की समाप्ति और उनके कार्य और रोजगार के क्षेत्र में कदम रखने का समय हो सकता है, तो कुछ अन्य के लिए उच्च शिक्षा का आधार। वे अपनी प्रायमिकताओं के आधार पर या तो शैक्षिक पाठ्यकक्रम को चुन सकते है या रोजगार पर व्यावसायिक पाठ्यक्रम को।

सामाजिक विज्ञान और वाणिज्य के विविध पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को उपलब्ध कराए जाने चाहिए ताकि वे रूझान और प्राथमिकता को ध्यान में रखते हुए विकल्पों का चुनाव कर सके।

सामाजिक पृष्ठभूमि **:–**

सामाजिक पृष्ठभूमि के अंतर्गत भौगोलिक स्थिति, सामाजिक स्थिति, पारिवारिक स्थिति, तथा आर्थिक स्थिति आदि आते है।

विले एवं एण्ड्रूज के अनुसार छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा का मुख्य उददेश्य छात्रों की सामाजिक –आर्थिक स्थिति को प्रदर्शित करता है यह स्थिति समाज में अन्य सदस्यों के साथ अपने संबंधों के परिणाम स्वरूप प्राप्त होती है। किसी व्यक्ति का उसके सामाजिक स्थिति के अनुरूप समाज में महत्व दिया जाता है। इस प्रकार व्यक्ति के विशिष्ट सामाजिक स्थिति पर उसके आर्थिक संसाधनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।यही कारण है कि वर्तमान में हम इसे सामाजिक– आर्थिक स्थिति प्रत्येक व्यक्ति की एक सामाजिक पृष्ठभूमि होती है। समाज में रहने वाले लोगों के आपसी संबंध, रीति–रिवाज, सामाजिक संस्थाए जैसे – विद्यालय, परिवार, मित्र–मण्डली आदि के संपर्क में आते है। प्रत्येक समाज की आवश्यकताएँ दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

आधुनिकीकरण और नगरीकरण के इस दौर में व्यक्ति कुछ आकांक्षाओं के आधार पर विषय चयन करता है, या मित्र–समूह से

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

प्रभावित होता है, लेकिन सामाजिक पृष्ठभूमि के कारण वह अपनी आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर पाता है।

समाज मानवीय संबंधों का जाल है और सामाजिक संबंध इस समाज के आधार हैं। समाज के सदस्यों की अंतःक्रिया से सामाजिक संबंधों की स्थापना होती है। विद्यालय और समाज में घनिष्ठ संबंध है क्योंकि दोनों ही शिक्षा के महत्वपूर्ण अभिकरण है।

1.7 शोध में प्रयुक्त चर :-

शैक्षिक आकांक्षा

1.8 शोध की परिसीमाएँ :-

किसी अनुसंधान या शोधकर्ता की विश्वसनियता एवं परिशुद्धता के लिए उसका एक निश्चित क्षेत्र होन आवश्यक होता है। एक निश्चित माध्यम से ही शोध कार्य व्यवस्थित एवं सटीक हो सकता है। जिसके फलस्वरूप परिणाम अच्छे एवं विश्वसनिय होते है। इसलिए प्रस्तुत शोध का सीमाकन इस प्रकार किया गया है।

1. प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र भोपाल है। इसमे केवल भोपाल शहर के जहाँगीराबाद क्षेत्र तथा कोलार क्षेत्र के विद्यालय को ही लिया गया है।

2. केवल विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थीयों को शोध प्रदत्त प्राप्त करने के लिए चयन किया गया है।

3. शोधकर्ता ने केवल शोधकार्य के लिए उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों को ही चयनित किया।